डॉ० हरिवंश राय बच्चन : एक परिचय

❑ डॉ० सत्यपाल श्रीवत्स

हिन्दी के प्रख्यात कवि और लेखक डॉ० हरिवंशराय बच्चन जब फिल्म जगत की जानी-मानी हस्ती अपने पुत्र अमिताभ बच्चन के मुंबई स्थित घर 'प्रतीक्षा' में 18 जनवरी 2003 को रात के 11.40 पर इस संसार से चल बसे तब भारत भर में शोक की लहर फैल गई। इस वयोवृद्ध साहित्यकार ने 27 नवम्बर 2002 को अपने जीवन के 95 वर्ष पूरे किये थे।

बच्चन जी ने 1935 में जब अपनी प्रसिद्ध काव्यकृति 'मधुशाला' प्रकाशित की थी और उसके कुछ पद अपने साहित्यकार मित्रों तथा सम्बन्धियों को सुनाए थे तो उन्हें चारों ओर से वाह-वाही तथा प्रशंसा भरे साधुवाद मिले थे। मधुशाला के कारण बच्चन जी को जो प्रसिद्धि मिली वैसी हिन्दी क्या भारत की अन्य भाषाओं के कवियों को शायद ही मिल पाई हो। उन दिनों लोग काफी-हाऊसों और स्टालों में काफी और चाय की चुस्कियों के साथ मधुशाला की पंक्तियां दुहराते हुए मस्ती में झूम उठते थे। वस्तुतः मधुशाला के सृजन के साथ ही 'बच्चन युग' का आरम्भ भी हो गया था, जो उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया। इतना ही नहीं बच्चन की आत्मकथा के चतुर्थ खण्ड-दशद्वार से सोपान तक की रचना के कारण भी उन्होंने प्रसिद्धि के उच्चतम आयाम छुए थे। इसीलिए उनके आलोचक आज कह रहे हैं, कि बच्चन दशद्वार से अन्तिम सोपान को छूकर अनन्त में विलीन हो गए हैं। यहां यह तथ्य भी भुलाया नहीं जा सकता कि उनकी आत्मकथा के ये पहले तीन खण्ड-'क्या भूलूं क्या याद करूं', 'नीड़ का निर्माण फिर' तथा 'बसेरे से दूर' किसी भी प्रकार से निम्न स्तर के नहीं हैं। वास्तव में इनकी आत्मकथा के सारे खण्ड एक दूसरे के पूरक हैं। जब तक क्रमशः सारे खण्ड न पढ़े जाएं तब तक बच्चन के समग्र व्यक्तित्व को समझना कठिन है। यदि अन्तिम खण्ड दशद्वार से सोपान तक में उनके व्यक्तित्व का चमत्कारी पक्ष उभरा है तो इसमें उनकी रचना-धर्मिता की परिपक्वता ही कारण हो सकती है। इस सन्दर्भ में शशिकला श्री वास्तव का यह मन्तव्य बड़ा उपयुक्त है-जैसा कि स्वाभाविक रूप से जीवन में होता है, धीरे-धीरे रागात्मकता का स्वरूप बदलता है, उसके विषय भी बदलते हैं और उसी के साथ जीवन दृष्टि भी बदलती है, कवि और लेखों के सृजन के रूप भी परिवर्तित हो जाते हैं और उसके विषय में बच्चन स्वयं कहते हैं-''आज मैं उससे इतनी दूर जा चुका हूं कि उसके सम्बन्ध में एक वस्तुगत दृष्टि भी रख सकता हूं।'' अतः यह कहा जा सकता है-यदि उनकी कविताएं और गीत एक अत्यन्त भावुक हृदय के उद्‌गार हैं तो जीवन के उत्तर अपराह्न काल में परिशिष्ट के रूप में लिखी गई उनकी आत्मकथा और संस्मरण उनके जीवन से जुड़े समाज युग, युग की ऐतिहासिक घटनाओं के विविध रूपों, युगीन विचारों, विश्वासों, धर्म, दर्शन, साहित्य,

साहित्यकारों तथा समय के विधि रूपों के परिप्रेक्ष्य में आत्म विश्लेषण और उनकी अपनी कविताओं के मनोवैज्ञानिक पाठ भी हैं।

बच्चन ने मधुशाला के बाद मधुबाला एवं मधुकलश की रचना करके काव्य जगत में अपना नाम 'मधुत्रयी का कवि' के रूप में प्रख्यात कर दिया। इन तीनों में लय और ताल का स्वर भी है और भावना, संवेदना और रस का हृदयस्पर्शी चमत्कार भी। इन सब में 'मधुशाला' ने इनके यश को बुलन्दियों तक पहुंचाया था। अपनी इस अमरकृति में कवि ने व्यावहारिक जीवन और दर्शन के अपनी प्रतिभा शक्ति द्वारा एकाकार कर दिया है। यही कारण है कि इसे पढ़ता हुआ पाठक किसी स्वप्नलोक में खो जाता है या उसमें जीवन की सचाई ढूंढने में व्यस्त हो जाता है। मधुशाला की निम्न पंक्तियों में कवि बच्चन ने अपने जीवन के अन्तिम पल का यद्यपि बड़े भावुक होकर चित्रण किया है, पर उसके दार्शनिक पक्ष पर विचार करने पर उसमें जीवन की जो सचाई मिलती है उससे कोई भी सूझ-बूझ वाला अपना मुंह नहीं मोड़ सकता है। वे पंक्तियां इस प्रकार हैं-

स्वागत के साथ विदा की होती देखी तैयारी,
बंद लगी होने खुलते ही, मेरी जीवन-मधुशाला।

मेरे शव के पीछे चलने वालो, याद इसे रखना,
राम नाम है सत्य न कहना कहना सच्ची मधुशाला।

मेरे शव पर वह रोए हो जिसके आंसू में हाला,
आह भरे वह, जो हो सुरभित मदिरा पीकर मतवाला।

दें मुझको वे कंधा जिनके पद मद-डगमग होते हों,
और जलूं उस ठौर, जहां रही हो मधुशाला।

कवि बच्चन एक श्रेष्ठ कवि की परिभाषा करने के साथ-साथ मधुशाला, प्याला और हाला को इस समग्र सृष्टि का प्रतीक समझता हुआ इन दोनों की (कवि और मधुशाला की) कितनी सुन्दर व्याख्या करता है, विचारणीय है-

'कवि का हृदय केवल हृदय नहीं, उसकी हृदय-गोद में त्रिकाल और त्रिभुवन सोते रहते हैं, सृष्टि दुध-मुंही बच्ची के समान क्रीड़ा करती है और प्रलय नटखट बालक के समान उत्पात मचाता है। उसका हृदयांगन गगन के गान, समीरण के और सागर के रोदन से प्रतिध्वनित हुआ करता है। हृदय-मंदिर में जन्म-जीवनमरण उसके अविरत गति से नृत्य किया करते हैं। इस कारण कवि हृदय के गलने के साथ ही आज समस्त विश्व मादक हाला से परिप्लावित हो उठा है। जल और थल गगन और पवन सिंधु और वसुंधरा, स्वर्ग और नरक, जड़ और चेतन, निशा और

---

1. 'संकल्प शोध' संपादक डॉ. रानी वर्मा, सेण्टर फॉर द स्टडी ऑफ सोसायटी एण्ड पालिटिक्स, कानपुर पृ ०1

दिवस, वन और उपवन, सर और सरिता, मिलन और विरह, प्रणय और संघर्ष, आशा और निराशा, जन्म और जीवन, काल और कर्म इत्यादि सभी वस्तुएं, जिनका अस्तित्व इस विश्व में है, आज हाला-प्याला-मधुशालामय आभासित हो रही हैं। (मधुशाला भूमिका पृ० 2)

इससे स्वतः सिद्ध हो जाता है कि कवि की प्रातिभ चक्षु (vision) के धरातल पर हाला, प्याला, साकी और मधुशाला के रूप में सर्वत्र कोई अज्ञात शक्ति प्रच्छन्न रूप में आभासित हो रही है। इस सन्दर्भ में कवि की ये पंक्तियां ध्यातव्य हैं:-

किसी ओर मैं आंखे फेरूँ , दिखलाई देती हाला,
किसी ओर मैं आंखे फेरूँ , दिखलाई देता प्याला।
किसी ओर मैं देखूं, दिखलाई देती साकी,
किसी ओर देखूं, दिखलाई पड़ती मुझको मधुशाला।

कवि बच्चन मधुशाला, हाला और साकी का गुणगान करते-करते हलाहल से अपना घनिष्ठ सम्बन्ध तो जोड़ लेता है, पर फिर उससे ऊब कर इसी लिए वह कह उठता है

''सुरा पी थी मैंने दिन चार
उठा था इतने से ही ऊब,
नहीं रुचि ऐसी मुझ को प्राप्त,
सकूं सब दिन मधुता में डूब।''

बच्चन एक विद्रोही कवि है और उसका विद्रोही स्वर मधुशाला के कई पद्यों में स्पष्ट मुखरित होता है। यह सर्वविदित है कि हाला प्यालावाद को प्रर्वतन करने का श्रेय पं० पद्मकांत मालवीय को जाता है, परन्तु बच्चन ने तो इस विचारधारा को आगे बढ़ा कर इसे इतना प्रवाह दिया कि बाद में यही हालाबाद के प्रर्वतक के रूप में प्रसिद्ध हो गए। अपने हृदय की भावुकता इसमें उंडेलकर कवि ने इसमें सरसता और तरलता भर दी। इसीलिए बच्चन ने इस संदर्भ में कहा था-कागज पै रख दिया कलेजा निकाल कर। ''भरदे प्याला, भुले दुनिया, भूले अपूर्णता दुनिया की। पीकर मदिरा मस्त हुआ तो प्यार किया क्या मदिरा से। मैं तो पागल हो उठता सुन लेता यदि मधुशाला।''

कवि कहता है कि दुनिया मेरी इस मदिरा पीने की आदत के लिए मुझे बार-बार लानतें देती रहती है। कवि कों ऐसी दुनिया से भारी चिड़ है, क्योंकि वह आगे चलकर कहता है कि जब वह गंगा जल पीता था तो भी इस दुनिया ने उसे कोई इज्जत नहीं दी। परिणामतः इस दुनिया वाले होते ही ईष्यालु स्वभाव वाले हैं। वे तो जब मंदिरों को भी बदनाम करने से परहेज नहीं करते तो मदिरालय की तो बात ही क्या है। इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में ध्यातव्य है-

क्या कहती दुनिया देखो, दुनिया देती लानत मुझको,
है कहती फिरती गली गली, मदिरा पीने की लत मुझको,

* * *

''गंगा जल था जब मैं पीता, कब दी उसने इज्जत मुझको,
बदनाम हो रहे मन्दिर हैं, यह तो फिर ठहरा मदिरालय।''

आगे चलकर कवि अधूरे ज्ञान वाले कवियों से चिड़कर कहता है कि वे लोग भी मुझ पर चिड़कर अपनी कटाक्ष भरी आंखें दिखाते हैं, परन्तु मैं तो उन्हें अपने मदिरा पीते ओंठ दिखाकर केवल विनय ही करता हूं-

''लेकिन मुझ पर कल के ज्ञानी भी आंखें अपनी दिखलाते।
कर पाया हूं इन अधरों से, मदिरा पीने की सिर्फ विनय''

यद्यपि आपतत: कवि बच्चन अपनी वेदना का ही चित्रण करने के कारण आत्मपरक (subjective) प्रतीत होता है, पर उसकी रचनाओं का गम्भीरता से चिन्तन करने पर उनमें सार्वभौमिकता का आभास होने से वे वस्तुगत (objective) प्रतीत होने लगता है।

कवि बच्चन की मधुशाला में हाला, प्याला और साकी का उन्मुक्त भाव से चित्रण किया गया है। परन्तु यह चित्रण मात्र लौकिक भावों की अभिव्यक्ति नहीं है, अपितु कवि इन में विशेष दार्शनिक भावों की अभिव्यंजना भी करता है। इन पंक्तियों में ये भाव प्रतिबिम्बत हुए हैं-

मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षण भर मेरा जीवन परिचय।
मृत्यु बनी है निर्दय साकी, अपने शत-शत कर फैला।
काल प्रबल है पीने वाला, संसृति है यह मधुशाला।

* * *

''शेख बुरा मत मानो, इसको, साफ कहूं तो मस्जिद को, अभी युगों तक सिखलायेगी, ध्यान लगाना मधुशाला।''

आगे चलकर कवि हिन्दू और मुसलमान दोनों को सम्बोधन करके दार्शनिकता भरे लहजे में कहता है-

''दोनों रहते एक, न जब तक मस्जिद में जाते।
बैर बढ़ाते मस्जिद-मंदिर, मेल कराती मधुशाला''

आगे चलकर कवि जब यह कहता है- ''मधुशाला वह नहीं, जहां मदिरा बेची जाती है। भेंट जहां मस्ती की मिलती, मेरी तो वह मधुशाला।''

तब उसका दार्शनिक भाव और भी तीव्रता से स्पष्ट हो जाता है। जब वह इस धरती की समग्र मानव जाति को इस बात के लिए उपालम्भ देता है कि वह अपने आपको देशों के नाम पर विभाजित कर देती है और धर्म या धर्मों के नाम पर धर्म या धर्मों का उपदेश देने वाले सिवाय घृणा फैलाने के कुछ नहीं करते। उन्हें इस सबसे ऊपर उठ कर (अर्थात अपने ज्ञानचक्षु खोलकर) देखना चाहिए कि इस धरती के आगे क्या है-''विभाजित करती मानवजाति, धरा पर देशों की दीवार/जरा ऊपर तो उठकर देख/वही जीवन है इस उस पार/ घृणा का देते हैं उपदेश/यहां धर्मो के ठेकेदार/खुला है सबके हित सब काल हमारी मधुशाला का द्वार।'' वास्तव में हाला, प्याला और मधुशाला को वह प्रतीक रूप में प्रयुक्त करता है। सभी में दार्शनिक भाव ही अन्तर्निहित है।

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि बच्चन की कविता में एक अनोखी छटा है। इसमें उद्दाम प्रवाह है। तीखी प्यास है इसमें मादकता संगीत की मधुरता भी है और कल्पनाओं की ऊंची उड़ान भी है।

यहां यह भी ध्यातव्य है कि जब कवि अपनी सतत साधना में ज्यों-ज्यों अग्रसर होता गया त्यों-त्यों उसकी अनुभूतियों में भी गहनता आती गई जिसका परिणाम था एक अलौकिक आनन्द। तभी तो उसके भावों की उद्भावना यों होती हैं-

''मौन खड़ी किस भांति रहूं, जब बज उठते हैं पग पायल।''

कवि बच्चन की अनुभूति में ज्यों-ज्यों परिपवक्ता आती चलती है त्यों-त्यों उसे जीवन की अस्थिरता का बोध होने लगता है परिणामत: उस अज्ञात के प्रति उसका आकर्षण भी बढ़ने लगता है। तभी तो वह यों गुनगुनाने लगता है-

दृगदेख जहां तक पाते हैं तम का सागर लहराता है।
फिर भी उस पार खड़ा कोई, हम सबको पार बुलाता है।
मैं आज चला, तुम आओगी कल, परसों सब संगी साथी
दुनिया रोती धोती रहती, जिसको जाना है जाता है।

मेरा तो होता मन डगमग, तट पर के ही इन कोरों से। जब में एकाकी पहुंचूगा, मंझधार, न जाने क्या होगा? इस पार प्रिये मधु है, उस पार न जाने क्या होगा? (मधुवाला के अन्तर्गत इस पार उस पार से)

क्योंकि कवि बच्चन को कंठ मधुरता का वरदान भी प्राप्त था, अत: वह जब-जब अपने मधुर-मादक स्वरों से कविता पाठ करते थे तो सुनने वाले मस्ती में झूम उठते थे। कवि अपनी रचना की भूमिका में अपने आलोचकों को करारा उत्तर देता हुआ अपनी रचना मधुशाला के रूपकों को स्पष्ट करता हुआ ऐसे भी कहता है-

1. सृष्टि या पृथ्वी कवि की विराट मधुशाला है।

2. मृत्य मानव शरीर मिट्टी का तन मस्ती का मन वाला प्याला है।

3. जीवन की (उल्लास चपल, उन्माद, तरल) हाला है।

4. पग ध्वनि में सुषमा और संकेत है।

5. कवि स्वयं ही बुलबुल है।

कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म इलाहाबाद के एक मध्यवित्त परिवार में 27 नवम्बर 1907 ई० में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पहले स्थानीय नगरपालिका विद्यालय और फिर कायस्थ पाठशाला में हुई। तदनन्तर कुछ समय तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के बाद इन्होंने हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी में अध्ययन करके अंग्रेजी में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वहां से वापस लौट इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 1941 ई० से लेकर 1952 ई० तक अध्यापन कार्य करते रहे। फिर इन्होंने लन्दन जाकर केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वहां से लौटकर इलाहाबाद में आकर विश्वविद्यालय में अंग्रेजी पढ़ाते रहे। उन्हीं दिनों इनका तेजी से विवाह भी हुआ था। तेजी इनके जीवन में इनके कवि-कर्म के लिए सदा प्रेरणा स्रोत बनी रही। जीवन संगिनी के रूप में तेजी का इन्हें भरपूर सहयोग मिलता रहा। इनके दो पुत्र अमिताभ तथा अजिताभ बच्चन हैं। अमिताभ बच्चन के मुंबई स्थित घर 'प्रतीक्षा' में ही इन्होंने अपने जीवन की अन्तिम सांस लेकर इस संसार से विदा ली थी।

जब यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पहली बार पढ़ाने लगे थे तो उन्हीं दिनों महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश भर में स्वतन्त्रता संग्राम चल रहा था। उसी से प्रेरित होकर इन्होंने यह कविता लिखी थी "सर जाए तो जाए पर हिन्द आजादी पाए" इत्यादि इस कविता से युवा वर्ग को बड़ी प्रेरणा मिली थी। इन्होंने उन दिनों अधिकांश कविताएं युवा वर्ग को उत्तेजित और प्रेरित करने के लिए लिखी थीं। इनकी कविताओं से युवा वर्ग केवल झूमता ही नहीं था अपितु तंग मानसिकता और घुटन से निजात पाकर स्वतन्त्र भी होना चाहता था। जब बाबू जय प्रकाश नारायण ने बिहार में अपना क्रांतिकारी आन्दोलन आरम्भ किया था तो इन्होंने युवा वर्ग का आह्वान इसी कविता से किया था। इनकी एक अन्य कविता की ये पंक्तियां भी ध्यातव्य हैं :-

"-तीर पर कैसे रुकूं आज लहरों से निमन्त्रण"। 1952 ई० में विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य छोड़कर बच्चन पहले आकाशवाणी में काम करने लगे और फिर 1955 ई० भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय में हिन्दी के विशेष अधिकारी नियुक्त हुए थे। उस पद पर 10 वर्षों तक कार्य करते हुए इन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी की भरपूर सेवा की और इसे जनसाधारण तक पहुँचाने

के लिए इसे सरल रूप देने का प्रयत्न किया। 1988 ई० में ये राज्यसभा के सांसद मनोनीत हुए थे और 1993 ई० में वहां से सेवा मुक्त होकर पूर्ण रूप से स्वतन्त्र होकर लेखन कार्य में प्रवृत्त हो गए थे।''

इन्होंने 1973 ई० में कविता कर्म से मुक्ति प्राप्त करके गद्य में लिखना प्रारम्भ किया था, जिसमें इन्होंने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी ।

बच्चन की रचनाएं–

1. तेरा हार (काव्य)1932
2. मधुशाला (काव्य) 1935
3. मधुवाला (काव्य) 1936
4. मधुकलश (काव्य) 1937
5. एकांत संगीत (काव्य) 1939
6. आकुल अंतर (काव्य) 1943
7. प्रारम्भिक रचनाएं (पहला और दूसरा भाग) 1943
8. संतरगिनी (काव्य) 1945
9. हलाहल (काव्य) 1946
10. बंगाल का काल (काव्य) 1946
11. प्रारम्भिक रचनाएं (तीसरा भाग, कहानियां) 1946
12. खादी के फूल (काव्य) 1948
13. सूत की माला (काव्य) 1948
14. मिलन यामिनी (काव्य) 1950
15. सोपान (संकल्प) 1953
16. प्रणय पत्रिका (काव्य) 1955
17. धार के इधर उधर (काव्य) 1957
18. आरती और अंगारे (काव्य) 1958
19. बुद्ध और नाचघर (काव्य) 1958

20. त्रिभंगिमा (काव्य) 1961

21. चार खेमे चौंसठ खूंटे (काव्य) 1962

22. दो चट्टानें (काव्य) 1965

23. बहुत दिन बीते (काव्य) 1967

24. कटती प्रतिमाओं की आवाज (काव्य) 1968

25. आरते प्रतिमानों के रूप (काव्य) 1969

26. जाल समेटा (काव्य) 1973

27. मेरी कविताई की आधी सदी (संकलन) 1981

आत्म कथा–

1. क्या भूलूं क्या याद करूं (1) 1969

2. नीड़ का निर्माण फिर (2) 1970

3. बसेरे से दूर (3) 1977

4. दस द्वार से सोपान तक (4)

ooo

1. टूटी–छूटी कड़ियां–1973

स्मृति यात्रा–

1. दश द्वार से सोपान तक (1955 से 1983 तक)

बाल साहित्य–

1. जन्मदिन की भेंट–1978

2. नीली चिड़िया–1978

3. बंदर बांट 1980

इनके अतिरिक्त बच्चन जी ने अनेक रचनाओं के अनुवाद भी किए हैं। इनकी अनेक संपादित रचनाएं भी हैं और इनके रचना संसार के बारे में विभिन्न लेखकों और समालोचकों के द्वारा रची हुई अनेकों कृतियों की भी एक लम्बी सूची है।

O